अमर उजाला

नई दिल्ली | मंगलवार, 9 अप्रैल 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

जब
हम दूसरों के जीवन
में उम्मीद पैदा करते हैं,
तो हम घृणा पर विजय पाने
का वादा करते हैं...
- कर्स्टन गिलिब्रैंड

अमेरिकी राजनीतिज्ञ

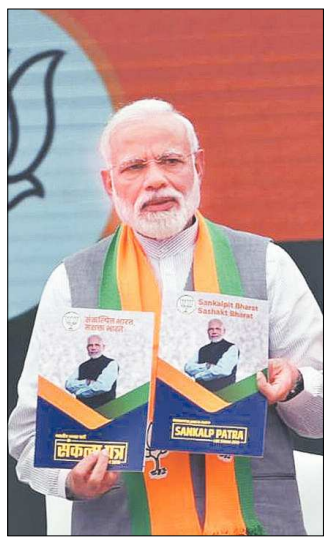

भाजपा ने जम्मू-कश्मीर से 370 और 35 ए हटाने की बात की है, जिससे यह एक बार फिर बहस का मुद्दा बन गया है; वहीं कृषि क्षेत्र पर खासा जोर देने से लगता है कि उसे एहसास है कि ग्रामीण भारत का विश्वास हासिल किए बिना वह फिर सत्ता में नहीं आ सकती।

राष्ट्रवाद, अंत्योदय और सुशासन

सत्रहवीं लोकसभा के चुनाव के पहले चरण के मतदान से तीन दिन पहले भारतीय जनता पार्टी ने अपना घोषणा पत्र-संकल्प पत्र- जारी किया है, जिसमें अपेक्षा के अनुरूप ही उसने राष्ट्रीय सुरक्षा और किसानों के मुद्दों को खासा महत्व दिया है। पुलवामा में सीआरपीएफ पर हुए आतंकी हमले और बालाकोट में भारतीय वायुसेना द्वारा आतंकी शिविर पर की गई कार्रवाई के बाद भाजपा राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे को चुनावी विमर्श के केंद्र में लाने में सफल रही है और उसने कहा है कि आतंकवाद पर वह जीरो टॉलरेंस की नीति पर चलेगी। पार्टी ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 और 35 ए को हटाने का वादा भी किया है, लेकिन पूर्ण बहुमत के बावजूद वह इससे हिचक रही थी, तो उसके पीछे की राजनीतिक बाध्यताओं को समझा जा सकता है। संकल्प पत्र का हिस्सा बनाकर उसने इसे बहस का मुद्दा जरूर बना दिया है। पार्टी ने नागरिकता संशोधन बिल फिर लाने की बात की है, जिससे लगता है कि इन दोनों मुद्दों के जरिये वह उन राज्यों से अधिक पूरे देश में संदेश देना चाहती है। पार्टी ने कृषि क्षेत्र की बदहाली को देखते हुए कई कदम उठाने की बात की है, जिसमें किसानों को हर वर्ष छह हजार रुपये देने की उसकी योजना के दायरे में अब सारे किसान होंगे। पार्टी ने सीमांत और छोटे किसानों को पेंशन देने की भी बात की है। प्रधानमंत्री मोदी पहले ही 2022 तक किसानों की आय दोगुना करने की बात कह चुके हैं। मगर संकल्प पत्र में इसकी व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत नहीं की गई है, जिससे पता चले कि जीडीपी में महज 17 फीसदी की हिस्सेदारी करने वाले कृषि क्षेत्र में इस सुधार के लिए पैसा कहां से आएगा। किसानों के मुद्दों को जितना महत्व दिया गया है, उससे लगता है कि पार्टी को एहसास है कि वह ग्रामीण भारत का विश्वास हासिल किए बिना दोबारा सत्ता में नहीं लौट सकती। छोटे व्यापारियों के लिए साठ वर्ष की उम्र में पेंशन देने का वादा आकर्षक है, मगर व्यावहारिक रूप में इसमें काफी जटिलताएं हैं। पार्टी ने राष्ट्रवाद, अंत्योदय और सुशासन पर जोर दिया है। महत्वाकांक्षी इरादे पेश करते हुए उसने, 2022 में जब देश की आजादी की पचहत्तरवीं वर्षगांठ होगी, पचहत्तर वादे पूरा करने का लक्ष्य रखा है। यह देखना होगा कि क्या, जैसा कि संकल्प पत्र से लगता है, यह चुनाव मोदी सरकार के कामकाज पर रायशुमारी साबित होगा।

केंद्र में रहेगा आंध्र का दबदबा

दिल्ली का रास्ता उत्तर प्रदेश से होकर गुजरता है, पर इस बार केंद्र में नई सरकार के गठन में दक्षिण के राज्यों की भी अहम भूमिका रहेगी। और उसमें भी आंध्र प्रदेश की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होगी।

आर. राजगोपालन, वरिष्ठ पत्रकार

इन दिनों पूरे देश में लोकसभा चुनाव की तैयारियां और प्रचार अभियान की गहमागहमी तेज है। सात चरणों में होने वाले लोकसभा चुनाव के पहले चरण के मतदान के लिए आज प्रचार अभियान का शोर थम जाएगा। उत्तर भारत में आम तौर पर कहा जाता है कि दिल्ली का रास्ता उत्तर प्रदेश से होकर गुजरता है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि इस बार केंद्र में नई सरकार के गठन में दक्षिण के राज्यों की भी अहम भूमिका रहेगी। और उसमें भी आंध्र प्रदेश की भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

आंध्र प्रदेश की राजनीति आजकल बहुत गर्म है और दिलचस्प भी। यहां 11 अप्रैल को 25 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों और 195 विधानसभा क्षेत्रों के लिए मतदान होगा। यहां के दो प्रमुख राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी जगन मोहन रेड्डी और चंद्रबाबू नायडू की रैलियों में भारी भीड़ उमड़ रही है। पर जगन मोहन रेड्डी के साथ सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पहली बार मतदान करने वाले युवा मतदाता उनके साथ हैं।

जगन रेड्डी आंध्र प्रदेश के लिए विशेष राज्य के दर्जे का आश्वासन चाहते हैं। अगर नरेंद्र मोदी ने इसके प्रति सहमति जताई, तो वाईएसआर कांग्रेस राजग को समर्थन करेगी। जबकि तेलुगू देशम पार्टी (तेदेपा) के चंद्रबाबू नायडू से चोट खाए एनडीए के लिए वह कतई स्वीकार्य नहीं हो सकते। तेलुगू देशम पार्टी को सत्ता-विरोधी रुझान का सामना करना पड़ रहा है। इसके नेता चंद्रबाबू नायडू को राज्य में सत्ता विरोधी लहर से निपटने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। जबकि जगन मोहन रेड्डी की यहां लहर चल रही है।

हालांकि आंध्र प्रदेश में राजनीति के अन्य खिलाड़ी भी हाथ आजमा रहे हैं। पहली बार यहां मायावती की बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने पवन कल्याण की जन सेना पार्टी (जसपा) के साथ गठबंधन किया है। जसपा जगन रेड्डी और चंद्रबाबू नायडू, दोनों के वोट काटेगी। इसलिए मुकाबला दिलचस्प होने की संभावना है। दुर्भाग्य से आंध्र प्रदेश में राष्ट्रीय पार्टियों की मौजूदगी उतनी मजबूत नहीं है। भाजपा और कांग्रेस, दोनों यहां बहुत कमजोर हैं।

बेशक इस बार अब तक राज्य में कोई बड़ी हिंसक घटना नहीं हुई है, लेकिन चुनाव आयोग वोट के लिए पैसों के लेन-देन पर अंकुश नहीं लगा पाया है। आंध्र प्रदेश में एक वोट की कीमत पांच हजार रुपये है। बैंकों में दो हजार रुपये के नोटों की कमी पड़ गई है, क्योंकि मतदान के दिन बांटने के लिए राजनीतिक पार्टियां इन्हें जमा कर लेती हैं। राज्य में लोकसभा सीट का हर प्रत्याशी मोटे तौर पर चुनाव के दौरान पैंतीस से पचास करोड़ रुपये खर्च करता है, जबकि विधानसभा सीट का प्रत्येक प्रत्याशी पंद्रह से बीस करोड़ रुपये खर्च करता है। उदाहरण के लिए, अगर तीन प्रमुख पार्टियां गुंटूर संसदीय सीट के लिए चुनाव लड़ रही हैं, तो उस निर्वाचन क्षेत्र का कुल खर्च 150 करोड़ रुपये होगा। आंध्र प्रदेश की बात करते हुए हमें याद रखना चाहिए कि यहां की राजनीति में तीन प्रमुख जातियों का वर्चस्व है- रेड्डी, खन्ना और कापू। राज्य में अल्पसंख्यक और सिने अभिनेताओं का भी प्रभाव है। दिवंगत एनटी रामाराव अब भी मतदाताओं पर हावी हैं। उन्हें राज्य में भगवान माना जाता है।

आंध्र में पहली बार कोई गठबंधन नहीं है। तेलुगू देशम पार्टी पहले वाम दल और भाजपा के साथ गठबंधन करती थी, लेकिन इस बार उसने गठबंधन नहीं किया है। जगन मोहन की पार्टी वाईएसआर कांग्रेस का राज्य में व्यापक जनाधार है, इसलिए वह तेलुगू देशम पार्टी से सत्ता छीनना चाहती है। क्या एनडीए से रिश्ता तोड़कर तेदेपा ने भारी गलती कर दी? इसका जवाब हां भी हो सकता है और नहीं भी। लेकिन तेदेपा को महत्वपूर्ण समय पर गठबंधन सहयोगी को धोखा देने के लिए जाना जाता है। राज्य में कांग्रेस का कैडर नहीं है। राज्य विभाजन से आंध्र जहां दो हिस्सों में बंट गया, वहीं कांग्रेस पार्टी ने अपना वोट, नेता और संगठन भी खो दिया।

राजनीतिक भाषणों का भारी पतन हुआ है, जिसमें एक-दूसरे को अपशब्द कहा जा रहा है और भ्रष्टाचार के आरोप लगाए जा रहे हैं। आंध्र प्रदेश में कुकुरमुत्तों की तरह उग आए टीवी न्यूज चैनल भी कहर ढा रहे हैं। सोशल मीडिया का प्रसार चरम पर है। राज्य में नौकरशाही भी तेदेपा और वाईएसआर कांग्रेस की तरह बंटी हुई है। मतदान से ठीक एक हफ्ते पहले चुनाव आयोग ने मुख्य सचिव और शीर्ष खुफिया अधिकारियों का तबादला कर दिया, क्योंकि वे तेदेपा के पसंदीदा थे। जो भी आंध्र प्रदेश की राजनीति को देखेगा, वह समझ जाएगा कि यहां एकतरफा लहर चल रही है और यह राष्ट्रीय दृष्टिकोण को बदलने के लिए बाध्य है। आंध्र प्रदेश के इस संदेश की अनदेखी नहीं की जा सकती।

तेलंगाना की बात करें, तो यहां हाल ही में विधानसभा के चुनाव हुए हैं। तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) ने यहां भारी बहुमत से जीत हासिल की है। ऑल इंडिया मजलिस-ए इत्तेहादुल मुसलमिन ने टीआरएस के साथ गठजोड़ किया है। टीआरएस का जन्म ही तेदेपा विरोध से हुआ है। केसीआर ने चंद्रबाबू नायडू के खिलाफ नकारात्मक बयानबाजी की है। केसीआर को तेलंगाना का महात्मा समझा जाता है। उन्हीं के संघर्ष से तेलंगाना को राज्य का दर्जा मिला। राज्य का मूड केसीआर के पक्ष में है। टीआरएस 17 लोकसभा सीटों में 14 सीट जीतने की अपेक्षा रखती है। पार्टी ऐसा प्रचार भी कर रही है।

तेलंगाना में भी कांग्रेस कमजोर है। वहां उसका कोई संगठन नहीं है। टीआरएस ने कांग्रेस के नेताओं को तोड़ा है। हालांकि भाजपा भी राज्य में कमजोर है, पर उसके पास संगठन है। क्या ऐसा प्रत्येक संसदीय क्षेत्र में अल्पसंख्यकों की एकजुटता के कारण है? प्रशासनिक क्षेत्र में टीआरएस ने अच्छा काम किया है। पिछले पांच वर्षों में राज्य में कोई प्रमुख सांप्रदायिक तनाव नहीं हुआ है।

अगर केंद्र में भाजपा बहुमत के करीब पहुंचती है, तो केसीआर की पार्टी टीआरएस नरेंद्र मोदी को समर्थन दे सकती है। हालांकि आगे क्या होगा, यह देखने वाली बात होगी। लेकिन मोदी और केसीआर के बीच अच्छा रिश्ता है। टीआरएस के 14 सांसद किसी भी गठबंधन के लिए बहुत बड़ा आंकड़ा होंगे।

अंतर्ध्वनि

>> सियारामशरण गुप्त

मेरा साहित्यिक जीवन भी चौसर की तरह का एक खेल है

भैया को चौसर खेलने का बहुत शौक है। जम जाते हैं, तो सात-सात, आठ-आठ घंटे अक्लांत भाव से खेलते रहते हैं। किसी श्रेष्ठ औपन्यासिक का उपन्यास भी कदाचित किसी को इतनी देर बैठा नहीं सकता। यह खेल भी जीती-जागती कहानियों का आकार ही जान पड़ता है। सभी बाजियों का कथानक एक, परंतु आनंद प्रति बार नया। प्रत्येक बाजी की कहानी ऐसी, जो सुखांत भी हो सकती है और दुःखांत भी; प्रत्येक अंतिम अध्याय के अंतिम पृष्ठ तक अनुभवी से अनुभवी खिलाड़ी को भी परिणाम का निश्चिंत पता नहीं लगने पाता। उसमें कहानी का चढ़ाव, चरम-परिणति और उतार आदि सब कुछ देखने को मिल जाता है। चार रंग की गोटें, सब एक दूसरे को धोखा देकर, अनेक आघात-प्रतिघातों के बीच पिटती और बचती हुई एक दूसरे से आगे निकल जाना चाहती हैं। इस द्वंद्व और अनिश्चितता के बीच में जो आनंद मिलता है, वह अच्छी से अच्छी कहानी में ही मिल सकना संभव है। भैया को खेलते देख मुझे भी यह खेल खेलने की आकांक्षा हो उठती है। पांसा मैं फेंकता जाता हूं और भैया चाल बताते जाते हैं,-यह गोट यहां रक्खो और वहां। मेरे जैसे अनाड़ियों का खेलना निरापद भी इसी तरह हो सकता है। जीत हो तो उसका आनंद अपना और हार हो तो उसकी लज्जा या संकोच का भार दूसरे के ऊपर। मेरा साहित्यिक जीवन भी इसी तरह का एक खेल है। स्वयं खेलने की अपेक्षा खेल देखना ही मुझे अधिक रुचिकर जान पड़ता है, फिर भी कभी-कभी खेलने के लिए स्वयं बैठ जाता हूं। साहित्यिक-जगत के इस अपरिचित और अज्ञात पथ पर चलते हुए भी मुझे कोई संकोच नहीं है। जहां किसी जगह भटक जाने की आशंका होगी, वहीं, खिलाने वाले का पुण्य-संकेत मुझे उचित मार्ग दिखाकर मेरी सारी कठिनाई दूर कर देगा।

-दिवंगत हिंदी साहित्यकार

मंजिलें और भी हैं

>> शेख सलीम

एक मौत ने मुझे प्यासों को पानी पिलाना सिखाया

बीस साल पहले जब मैं अपना गांव छोड़कर हैदराबाद आया, तो सबसे पहले यहां की गर्मी ने मुझे हैरान-परेशान किया। गर्मी हमारे गांव में भी पड़ती है। पर वहां पेड़ों की घनी छांव है। मुझे याद है कि बचपन में गर्मी के दिनों में जब कोई राहगीर या फकीर मेरे घर का दरवाजा खटखटाता था, तो अम्मी उन्हें घड़े का ठंडा पानी पिलाती थीं। हैदराबाद में आने के बाद मैं ऑटो चलाने लगा। लेकिन अप्रैल का महीना शुरू होते ही सड़क पर ऑटो लेकर निकलना काफी कठिन काम लगता। प्यास लगने पर मैं पानी पीने के लिए निकलता, तो पानी इतना गर्म होता कि वह पिया नहीं जाता। फिर मैंने पानी का बोतल साथ रखना शुरू किया। लेकिन घंटे भर बाद ही बोतल का पानी भी गर्म हो जाता।

हैदराबाद की सड़कों पर मेरी जिंदगी इसी तरह बीत रही थी। लेकिन इसी दौरान एक ऐसी घटना हुई, जिसने मुझे झकझोर दिया। वह जून की दोपहर थी। एक गरीब बुजुर्ग को मैंने सड़क पर चलते हुए देखा। मैंने उसके पास जाकर अपना ऑटो धीमा किया, तो उसने मुझसे पीने के लिए पानी मांगा। संयोग से बोतल का पानी खत्म हो चुका था। मैं बेहद शर्मिंदा हुआ और आगे बढ़ गया। डेढ़ घंटे बाद मैं उसी रास्ते से लौटा, तो उस बुजुर्ग को सड़क पर तड़पते हुए देखा। उसे ऑटो में लादकर मैं एक पानी के नल के पास ले गया। पर पानी इतना गर्म था कि उससे बुजुर्ग की हालत में कोई फर्क नहीं पड़ा। जब तक उसे अस्पताल ले जाया जाता, उसकी मौत हो चुकी थी।

अपने रूट के कई जगहों पर मैंने कुत्तों और पक्षियों के लिए भी पानी के बर्तन रखे हैं।

उस हादसे ने मुझे इतना गमगीन किया कि दो दिनों तक मैं ऑटो लेकर सड़क पर नहीं निकल पाया। अगर उस बुजुर्ग को समय पर पानी मिलता, तो शायद उसकी जान बच सकती थी। मुझे अपनी मरहूम अम्मी की याद आई। मुझे लगा, जैसे वह कह रही थीं कि लोगों को ठंडा पानी पिला। बस, मैंने अपने ऑटो में एक वॉटर कूलर और बीस लीटर पानी के दो कैन रखना शुरू किया। तब से मेरी जिंदगी पूरी तरह बदल गई।

मैं रोज सुबह नौ बजे फलकनुमा इलाके से, जहां मैं अपने परिवार के साथ रहता हूं, निकलता हूं और सवारियां लेते-उतारते हुए सड़कों पर प्यासे लोगों को पानी पिलाने का काम भी करता हूं। यह ऊपर वाले की कृपा है कि गर्मियों में मेरा ऑटो कभी सवारियों से खाली नहीं होता, क्योंकि उन्हें मेरे ऑटो में ठंडा पानी भी मिलता है। सवारियों को पता है कि मैं पैसे के पीछे नहीं भागता। अपनी रोजी-रोटी कमाने के अलावा एक इंसान होने के नाते भी मेरे कुछ उसूल हैं। खासकर गर्मियों के इन दिनों में सवारियों से ज्यादा मैं प्यासे लोगों की चिंता करता हूं। सड़क से गुजरते लोग, कहीं छांव में बैठे मजदूर और रेड लाइट पर अपनी ड्यूटी बजाते ट्रैफिक पुलिस के जवान, सब मेरे ऑटो के पास आकर ठंडा पानी पीते हैं। अपने रूट के कई जगहों पर मैंने कुत्तों और पक्षियों के लिए भी पानी के बर्तन रखे हैं। गर्मियों में मैं नियमित रूप से उनमें पानी भरता हूं। इन दिनों कई बार मुझे बीस लीटर वाले तीन कैन की जरूरत पड़ जाती है। लोग मुझे पानी के लिए पैसे देना चाहते हैं, पर मैं यह काम पैसे कमाने के लिए नहीं करता। और न ही यह कोई ऐसा बड़ा काम है, जिसके लिए मुझे याद रखा जाए। जो काम मेरी अम्मी गांव में करती थीं, वही मैं हैदराबाद शहर में करने की कोशिश में लगा हूं।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

कर्ज के बोझ से दबा पाकिस्तान

सच तो यह है कि पाक सरकार अवाम को आर्थिक सुरक्षा प्रदान नहीं कर पाई। आज भी वहां चार करोड़ से अधिक लोग बेरोजगार हैं। इस बेकारी के कारण युवा दहशतगर्दी का दामन थाम रहे हैं। पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद की धुरी बन गया है।

कुलदीप तलवार

पाकिस्तान की वर्तमान सरकार की गलतियों और मतभेदी नीतियों को अभी तक पाक जनता सब्र के साथ इसलिए नजर अंदाज कर रही थी कि पिछली सरकारों ने जनता की समस्याओं को हल करने के बजाय अपना सारा समय लूट-खसोट में लगा दिया। पिछली सरकारों के भ्रष्टाचार से तंग अवाम को इस बात की उम्मीद थी कि इमरान खान देश में फैले भ्रष्टाचार, महंगाई व बेरोजगारी को खत्म कर देंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। बल्कि हालात और खराब हो गए हैं।

पाक की अर्थव्यवस्था बुरी तरह लड़खड़ा गई है। देश कर्ज के बोझ से दिवालिया होने के कगार पर है। सरकार को अपने पहले साल में 19 अरब का कर्ज चुकाना है। सूद की शक्ल में प्रतिदिन छह अरब रुपये अदा करने पड़ रहे हैं। चालू घाटा बढ़कर नौ अरब रुपये हो गया है। कर्ज चुकाने के लिए सरकार ने सरकारी संपत्तियों को बेचने का फैसला लिया है। लाख कोशिशों के बावजूद अभी तक वह अपने मित्र देशों से व आईएमएफ, विश्व बैंक से कर्जा लेने में विफल रही है। चीन ने अब पाकिस्तान को दिवालिया होने से बचाने के लिए दो अरब डॉलर कर्ज देने का फैसला लिया है।

दूसरी तरफ पाकिस्तान में कर्ज माफ कराने वाले आजाद घूम रहे हैं, जिसने पाक की अर्थव्यवस्था पर बुरा असर डाला है। वर्ष 2009 से 2015 तक 245 अरब रुपये के कर्ज माफ कराए गए। पिछले 25 साल में 988 से ज्यादा कंपनियों और रसूख वाले लोगों ने चार खरब 30 अरब छह करोड़ रुपये के कर्ज माफ कराए। कर्ज माफ कराने वालों में राजनीतिक व कारोबारी लोग शामिल हैं। देश में ऐसे लोगों के खिलाफ कोई कानून नहीं है। लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था से जरूरी चीजों की कीमतें बढ़ गई हैं। इन दिनों टमाटर 100 रुपये और आलू 60 रुपये किलो से भी ज्यादा बिक रहा है। पेट्रोल की कीमतें आसमान छू रही हैं। सच तो यह है कि पाक सरकार अवाम को आर्थिक सुरक्षा प्रदान नहीं कर पाई। आज भी चार करोड़ से अधिक लोग बेरोजगार हैं। इस बेकारी के कारण युवा दहशतगर्दी का दामन थाम रहे हैं।

इमरान खान पाकिस्तान में जड़ पकड़ चुके भ्रष्टाचार को खत्म करने की बात करते हैं। मगर उनकी पार्टी के बहुत से सदस्य ऐसे हैं, जो भ्रष्टाचार के लिए जाने जाते हैं। इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि हाल ही में वह खुद इसकी लपेट में आ गए हैं। लाहौर हाई कोर्ट में एक याचिका दायर की गई है, जिसमें 2018 के चुनाव में उन पर ईमानदार व नेकनीयत न होने का आरोप लगा है कि उन्होंने अपने नामांकन-पत्र में अपनी अवैध बेटी की जानकारी छिपाई थी। ऐसा करके उन्होंने पाकिस्तानी संविधान के अनुच्छेद 62 और 63 के प्रावधान को तोड़ा है। उनकी कुर्सी भी जा सकती है। इमरान खान की बहन अलीमा पर आरोप है कि उसने दुबई में अपनी जायदाद टैक्स चोरी के लिए छिपाई है। पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ भ्रष्टाचार के कई मामलों में आरोपी सिद्ध हो चुके हैं और सजा काट रहे हैं। ऐसे ही पाक के पूर्व राष्ट्रपति और उनकी बहन फरियाज तालपुर के खिलाफ मनी लांड्रिंग का केस बना हुआ है और उनके देश से बाहर जाने पर रोक लगी हुई है। पाकिस्तान भ्रष्टाचार से जूझ रहा है।

इधर पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद की धुरी बन गया है। दुनिया भर में प्रमुख आतंकवादी हमलों के तार पाकिस्तान से जुड़े हुए हैं। अमेरिका पर 9/11 के आतंकी हमले के प्रमुख ओसामा-बिन-लादेन को भी पाकिस्तान में पनाह मिली थी। पुलवामा में हुए आतंकी हमले को पाकिस्तान के आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद ने अंजाम दिया। इमरान खान ने सत्ता संभालने के बाद कहा था कि वह सबसे पहले जनता की समस्याओं को हल करेंगे और फिर प्रशासन में सुधार लाएंगे, पर अभी तक अपने आठ महीने के कार्यकाल में विफल रहे हैं। देखना यह है कि अगले चंद दिनों में पाकिस्तान के हालात क्या शक्ल लेते हैं।

खुली खिड़की

यहां हम सबसे आगे

हाल के वर्षों में भारत में सोशल मीडिया का उपयोग तेजी से बढ़ा है। यही वजह है कि फेसबुक उपयोगकर्ताओं के मामले में हमने अमेरिका को भी पीछे छोड़ दिया है।

आंकड़ेः करोड़ में

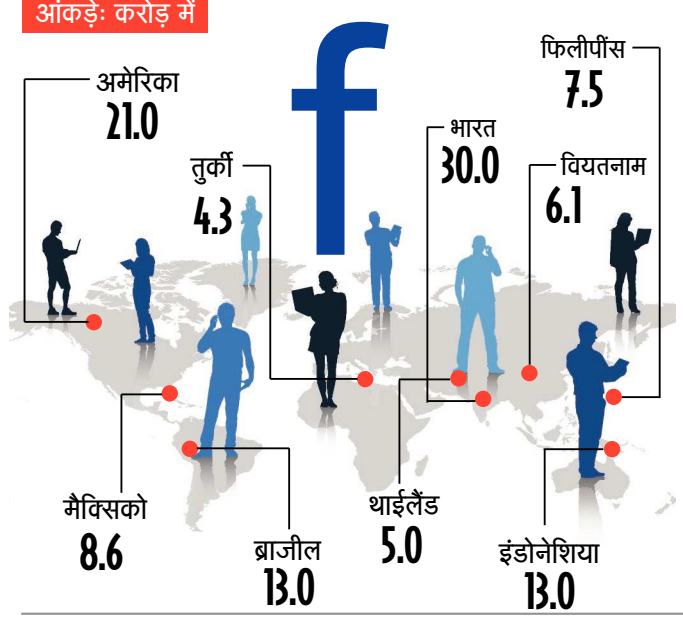

स्रोत-Facebook, Spectator Index

मां से बढ़कर कोई नहीं

सत्संग

स्वामी विवेकानंद से एक बार एक जिज्ञासु ने प्रश्न किया, महाराज, इस संसार में मां की महिमा किस कारण से गाई जाती है? यह सुनकर स्वामी जी मुस्कराए, फिर बोले, पांच सेर वजन का एक पत्थर ले आओ। उस व्यक्ति को पहले इतना बड़ा पत्थर ढूंढने में ही बड़ी परेशानी हुई। बहुत ढूंढने के बाद उसे एक पत्थर मिला, लेकिन उसे उठाकर स्वामी जी के पास तक ले आने में ही उसके पसीने छूट गए। स्वामी जी ने उससे कहा, अब यह पत्थर अपने पेट पर बांध लो और घर चले जाओ। चौबीस घंटे बाद तुम मेरे पास आना, फिर मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूंगा। स्वामी जी के आदेशानुसार उस व्यक्ति ने वह पत्थर अपने पेट पर बांध लिया और घर चला गया। पत्थर पेट पर बांधकर वह दिन भर काम करता रहा, लेकिन हर क्षण उसे परेशानी और थकान का अनुभव होता रहा। शाम होते-होते पत्थर का बोझ संभाले हुए चलना-फिरना उसके लिए कष्टकर हो गया।

थका-मांदा वह स्वामी जी के पास पहुंचा और कहने लगा, महाराज, इस पत्थर को अब और अधिक देर तक अपने पेट पर बांधकर मैं नहीं चल सकूंगा। स्वामी जी बोले, कुछ घंटे तक तुमसे इस पत्थर का बोझ नहीं उठाया गया। मां अपने शिशु को गर्भ में नौ महीने तक ढोती है और गृहस्थी के सारे काम भी करती है। मां की महिमा इसी कारण से गाई जाती है, क्योंकि उससे अधिक धैर्य रखने वाली और सहनशील कोई नहीं।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

कमल, मां और डायरेक्टर

कमल नामक एक लड़के की कहानी, जिसे एक कंपनी के डायरेक्टर ने मां को महत्व देना सिखाया।

कमल हर परीक्षा में अव्वल आता था। सबको भरोसा था कि उसे आसानी से नौकरी मिल जाएगी। उसने एक बहुराष्ट्रीय कंपनी के इंटरव्यू के पहले तीन राउंड पार भी कर लिए थे। आखिरी राउंड में कंपनी के डायरेक्टर खुद इंटरव्यू ले रहे थे। उन्होंने पूछा, क्या आपको कभी कोई स्कॉलरशिप मिली है? कमल ने कहा, नहीं। डायरेक्टर ने सवाल किया, आपने स्कूल की फीस कैसे जमा की? क्या आपके पिता घर के खर्च संभालते थे? कमल ने कहा, मैं एक साल का था, तभी मेरे पिता का देहांत हो गया था, जिसके बाद मेरी मां घर चलाती थीं। डायरेक्टर ने पूछा, आपकी मां क्या करती हैं? कमल ने बताया, वह लोगों के घरों में कपड़े धोती हैं। डायरेक्टर ने कमल ने हाथ देखे, जो साफ और मुलायम थे। डायरेक्टर ने पूछा, क्या आपने कभी कपड़े धोने में मां की मदद की? कमल ने कहा, नहीं, मेरी मां चाहती थी कि मैं सिर्फ पढ़ाई पर ध्यान दूं। डायरेक्टर ने कहा, आज घर जाकर अपनी मां के हाथ अच्छे से साफ करना और कल आकर मुझसे मिलना। कमल बहुत खुश था। घर लौटकर उसने मां से कहा, आज मैं आपके हाथ धोना चाहता हूं। उसने देखा कि उसकी मां के हाथों में झुर्रियां पड़ गई थीं। वह पहली बार अपनी मां का दर्द महसूस कर पा रहा था। उस दिन बचे हुए सारे कपड़े कमल ने खुद धोए। अगले दिन कमल इंटरव्यू के लिए पहुंचा, तो डायरेक्टर उसकी सूजी आंखें देखकर कहानी समझ गए। उन्होंने कमल से पूछा, कल के अनुभव से आपने क्या सीखा? कमल ने कहा, मुझे इस बात का एहसास हुआ कि मैं आज जो भी हूं, वह अपनी मां की वजह से हूं। डायरेक्टर बोले, मुझे ऐसा ही व्यक्ति चाहिए था, जो रिश्तों और मूल्यों को पैसों से बढ़कर माने। हमारी कंपनी में आपका स्वागत है।

पैसों के बजाय जीवन मूल्यों को महत्व देने वाले लोग ज्यादा सफल होते हैं।